औपनिवेशिक भारत में शिक्षण संस्थाओं का विकास (1900-1947): वाराणसी के विशेष संदर्भ में एक ऐतिहासिक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर दरभंगा

सामाजिक विज्ञान संकाय इतिहास

विभाग

में

पी०एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध पर्यवेक्षक

डॉ० मनीष कुमार

इतिहास विभाग

एल. एन. मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर दरभंगा

शोधार्थी

प्रिया सिंह

इतिहास विभाग

एल. एन. मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर दरभंगा

औपनिवेशिक भारत में शिक्षण संस्थाओं का विकास (1900-1947): वाराणसी के विशेष संदर्भ में एक ऐतिहासिक अध्ययन

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारत अपनी शिक्षा, साहित्य और दर्शन के लिए जाना जाता है। प्राचीन काल में शिक्षा का जुड़ाव मुख्य रूप से धर्म से था तथा शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सभी को नहीं था। वैदिक काल में वर्णादि को सीखने की प्रक्रिया को शिक्षा के रूप में लिया जाता था। तैतरीय उपनिषद् के द्वितीयक अनुवाक में शिक्षा की व्याख्या की गई है, जो इस प्रकार है:

शिक्षाम् व्याख्या स्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। साम संतानः। इत्युक्तः शिक्षाध्यायः॥ अर्थात हम शिक्षा की व्याख्या करते हैं, वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम तथा संतान ये सब शिक्षा की सार वस्तुएँ हैं।
प्राचीन काल में ब्राह्मण वर्ग को पूर्णतः धार्मिक कर्मकांड तथा धार्मिक ग्रंथ संबंधित शिक्षा, क्षत्रिय वर्ग को युद्ध तथा राजनीति संबंधित शिक्षा एवं वैश्य वर्ग को मुख्यतः व्यापार व अर्थ संबंधित शिक्षा दी जाती थी। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य केंद्र गुरुकुल ही था। महाजनपद काल तथा उसके बाद के समय मे जब अनेक राज्य स्थापित होते गए तब शिक्षा के नये केंद्र भी बनते गए। प्राचीन काल में तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, ओदंतपुरी, मिथिला, काशी आदि शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे जहाँ धर्म की शिक्षा के साथ आयुर्वेद, ज्योतिष, न्याय, दर्शन, अंकगणित, तर्क तथा राजनीति की भी शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन काल में पाठशाला वास्तविक प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप है जिसमें पढ़ने- लिखने के साथ अंकगणित की भी शिक्षा दी जाती थी। ये पाठशाला ब्रिटिश राज के दौरान भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाए गए।

मध्य काल के दौरान भारतीय शिक्षा में कमी तो आयी फिर भी शासकों द्वारा शिक्षा हेतु योगदान दिया गया। इस दौरान शिक्षा के स्वरूप मे कुछ बदलाव भी आये। 8वी सदी में अरब आक्रमण के साथ ही भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ जो बाद में भारत का एक हिस्सा बन गये। 1192 ई. में दिल्ली पर मुहम्मद गोरी का शासन स्थापित हुआ। उसने उत्तर भारत के अनेक मंदिरों को तोड़ कर उनके स्थान पर मस्जिद की स्थापना करवाया। मकतब और मदरसा मस्जिद से जुड़े होते थे। इस्लाम मे मकतब प्राथमिक शिक्षा के तथा मदरसा माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के केंद्र थे। इनमें मुख्यतः इस्लाम धर्म संबंधी तथा अरबी और फारसी की शिक्षा दी जाती थी। सल्तनत काल में इल्तुतमिश ने शिक्षा संस्थान के रूप मे नासिरी मदरसा की स्थापना कराई। फिरोज शाह तुगलक तथा सिकंदर लोदी ने शिक्षा मे योगदान दिया। सिकंदर लोदी के समय हिन्दुओ ने भी फारसी का अध्ययन आरंभ किया। इस प्रकार मध्य काल मे शिक्षा का एक उद्देश्य रोजगार प्राप्ति संबंधी भी हो गया। मुगल शासक अकबर यद्यपि स्वयं पढने लिखने मे अक्षम था तथापि उसने शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। अकबर के समय

मदरसा के पाठ्यक्रम मे विज्ञान व साहित्य को भी जोड़ा गया। उसने कई संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवाद करवाए।

18वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे ब्रिटिश राजनीतिक वर्चस्व की स्थापना ने सदियों से चले आ रहे भारतीय समाज के ढांचे को पूर्णत: प्रभावित किया। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अपनाई गई साम्राज्यवादी नीतियां विषेश कर भारत के आयात-निर्यात व्यापार नियंत्रण पर आधारित निवेश की नीति ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के दो आधार, कुटीर उद्योग व कृषि पर अव्यवस्थित प्रभाव डाला। इस परिवर्तन ने ग्रामीण जीवन के परंपरागत शैक्षिक नियमो और संस्थाओ पर भी प्रभाव डाला।

18वीं शताब्दी के मध्य तक भारत में हुए राजनीतिक उथल-पुथल ने शिक्षा व्यवस्था को भी प्रभावित किया । इस ओर अधिक ध्यान न देने तथा अनुदान प्राप्ति मे कमी के कारण शिक्षा व्यवस्था जर्जर अवस्था मे आ गई थी। 1784 ई० मे कोर्ट आफ डायरेक्टर को लिखे गए अपने एक पत्र द्वारा वारेन हेस्टिंग्स ने शिक्षा की जीर्ण अवस्था पर प्रकाश डाला। समय समय पर कम्पनी के अधिकारियों द्वारा तथा कुछ मिशनरियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य किए गए। जैसे 1781 मे वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना किया, 1791 ई. में बनारस के प्रेसिडेंट के रूप मे नियुक्त जोनाथन डंकन ने बनारस संस्कृत कालेज की स्थापना की।

1813 ई० के चार्टर एक्ट के तहत भारत में शिक्षा के विकास पर एक लाख रुपए खर्च किए जाने का प्रावधान था। इस प्रकार भारत में पहली बार शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी प्रयत्न किया गया। उसके पश्चात ब्रिटिश शासन द्वारा इस ओर ध्यान दिया गया तथा समय-समय पर शिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु कार्य किए गए।

वाराणसी में शिक्षा व्यवस्था

वाराणसी को काशी तथा बनारस आदि नामो से भी जाना जाता है। यह वर्तमान भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थापित एक नगर है जो गंगा नदी के तट पर बसा हुआ एक प्राचीन धार्मिक शहर है। वाराणसी का काशी नाम ऋग्वेद से ही मिलता है। "काशी" का अर्थ है "रौशनी का शहर" अर्थात एक ऐसा स्थान जो ज्ञान की रौशनी से जगमगा रहा हो।

अमेरिकन लेखक मार्क ट्वाईन ने 19 वीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारत की यात्रा की तथा काशी के विषय में कहा, "*Kashi is older than history, older than tradition, older even than legend and looks twice as old as all of them put together.*"

प्राचीन काल से वाराणसी हिन्दु, बौद्ध तथा जैन धर्म का केंद्र बना रहा। भारत के विभिन्न भागो से विद्वान वाराणसी मे संस्कृत, वेद, धर्म, दर्शन, ज्योतिष, विज्ञान आदि की शिक्षा प्राप्त करने हेतु आते थे। भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश वाराणसी के सारनाथ में दिया था जिसे बौद्ध धर्म में धर्म चक्र प्रवर्तन कहा गया।

विष्णु पुराण के अनुसार मान्यता है कि आयुर्वेद के देवता कहे जाने वाले धन्वन्तरि के वंशज दिवोदास ने विश्व का प्रथम शल्य चिकित्सा विद्यालय काशी में ही स्थापित किया जिसके प्राचार्य सुश्रुत थे।

मध्य काल के आरंभ में वाराणसी मुख्यतः संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा। अलबरुनी ने भी भारत मे शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में काशी का उल्लेख किया है। 11वीं 12वीं शताब्दी में वाराणसी गहड़वाल वंश के अंतर्गत था। गहड़वाल रानी कुमार देवी ने बौद्ध भिक्षुओं के लिए सारनाथ में एक बौद्ध विहार स्थापित करवाया था।

1194 ई० में कुतुबुद्दीन एबक ने वाराणसी पर अधिकार कर लिया। इस दौरान बनारस मे शिक्षा मे कमी आई परन्तु मुहम्मद बिन तुगलक के समय में शिक्षा में पुनः विकास होने लगा। मध्य काल के दौरान मुस्लिम शासकों द्वारा वाराणसी के अनेक मंदिरों को तोड़ा गया। उस काल में मंदिर शिक्षा का केन्द्र होते थे अतः संस्कृत व धर्म की शिक्षा में कमी आई परंतु इस दौरान वाराणसी में अरबी और फारसी शिक्षा का विकास आरंभ हुआ।

18वीं शताब्दी में बनारस के प्रेसिडेंट के रूप में नियुक्त जोनाथन डंकन ने 1791 ई० मे बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। इसका उद्देश्य न्याय, साहित्य और हिन्दु धर्म की शिक्षा प्रदान करना तथा मुख्य रूप से यूरोपीय जजो के लिए प्रशिक्षित हिन्दु सहायक तैयार करना था।

शिक्षा पर आंग्ल- प्राच्य विवाद के पश्चात 1835 ई० में आए मैकाले के घोषणापत्र में अंग्रेजी शिक्षा को मान्यता प्राप्त हुई व इससे भारतीय लोगों को शिक्षित करने का उद्देश्य स्पष्ट हो गया। अंग्रेजी शासन द्वारा भारतीयों को शिक्षित करने का मुख्य उद्देश्य था एक ऐसा वर्ग तैयार करना जो रंग रूप से तो भारतीय हो परंतु शिक्षा व रहन-सहन से यूरोपीय। अर्थात भारतीय का एक ऐसा वर्ग तैयार करना जो अंग्रेजी शासन व्यवस्था का समर्थक हो तथा शासन में सहायता प्रदान कर सके।

अंग्रेजी शासन द्वारा समय-समय पर शिक्षा के क्षेत्र में किए गए सुधार द्वारा वाराणसी में भी शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन होता गया तथा शिक्षण संस्थानों की स्थापना व विकास होता रहा। वाराणसी में प्रथम अंग्रेजी स्कूल 1814 ई० में राजा जय नारायण घोषाल द्वारा स्थापित किया गया। 1830 ई० में बनारस में एक स्कूल स्थापित किया गया जिसे 1836 ई० में बनारस गवर्नमेंट स्कूल नाम दिया गया। 1844 ई० में बनारस स्कूल तथा संस्कृत कॉलेज को मिला कर एक संस्था बनायी गयी जिसे नाम दिया गया बनारस कॉलेज। 1898 ई० में सेंट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना एनी बेसेंट द्वारा की गई। 1909 ई० में राजा उदय प्रताप द्वारा व्यक्तिगत तौर पर क्षत्रिय हाई स्कूल स्थापित किया गया। बालिकाओं के लिए प्रथम शिक्षण संस्थान एनी बेसेंट द्वारा 1913 ई० में वसंत महिला कॉलेज के रूप में स्थापित किया गया। इसी प्रकार 1916 ई० में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना मदन मोहन मालवीय जी के अथक प्रयासों से हुई।

20 वी सदी में भारत में हो रहे राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। इस दौरान वाराणसी में शिक्षा हेतु स्वदेशी शिक्षण संस्थानों की भी स्थापना हुई। 1921 ई० में काशी विद्यापीठ की स्थापना की गई। 1921 में ही वल्लभराम सालिग्राम मेहता द्वारा वाराणसी में संगवेद विद्यालय की स्थापना की गई जो संस्कृत शिक्षा के लिए जाना गया।

इस प्रकार वाराणसी प्राचीन काल से वर्तमान समय तक अनेक परिवर्तन के बाद भी शिक्षा की नगरी के रूप में जाना जाता है।

साहित्य सर्वेक्षण

- J.M. Sen (1941) ने अपनी पुस्तक **History of Elementary Education in India** मे ब्रिटिश काल मे भारत की शिक्षा व्यवस्था पर चर्चा किया है। इन्होने आरम्भ मे ब्रिटिश काल से पूर्व भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विषय मे बताया है । ब्रिटिश शासन मे शिक्षा के विकास हेतु किए गए प्रयास, विभिन्न चरणों मे बंगाल, मद्रास , संयुक्त प्रान्त में शिक्षा व्यवस्था मे व्यक्तिगत स्तर पर किए गए कार्यों, ब्रिटिश शासन द्वारा समय-समय पर लाये गये शिक्षा संबंधित कानून में शिक्षा के विकास तथा विभिन्न स्तरो पर शिक्षण संस्थानो की स्थापना पर चर्चा की गई है।

- S.N. MUKERJI (1951) ने अपनी पुस्तक **History of Education in India** में ब्रिटिश काल के दौरान भारत में शिक्षा के विकास, शिक्षा से जुड़ी समस्याओं तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा लायी गयी शिक्षा नीतियों का क्रमवार अध्ययन प्रस्तुत किया है।

- Suresh Chandra Ghosh (1989) ने अपनी पुस्तक **Education Policy in India Since Warren Hastings** में ब्रिटिश भारत में लायी गयी कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा नीतियों के विषय में विस्तार से चर्चा की है। इन्होंने कंपनी शासन के दौरान भारत में शिक्षा के साथ-साथ 1854 के वुड्स डिस्पैच तथा 1902 के विश्वविद्यालय अधिनियम पर भी प्रकाश डाला है। इसमें महिला शिक्षा और विज्ञान -प्रौद्योगिकी शिक्षा के विकास की भी जानकारी दी गई है ।

- Dharampal (2000) ने अपनी पुस्तक **The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth century**, के अंतर्गत 18वीं सदी मे भारत में स्थानीय भाषा में शिक्षा पर प्रकाश डाला है। इसमें बंगाल में शिक्षा पर W. एडम की रिपोर्ट (1835-1838) के विषय मे उल्लेख किया है। शिक्षा को लेकर महात्मा गांधी के विचार, स्वदेशी भारतीय शिक्षा के विषय पर महात्मा गांधी तथा सर फिलिप हार्टोग के पत्राचारो को भी बारीकी से प्रस्तुत किया गया है।

- Sudha Pai (2002) ने अपने लेख **Politics of Language: Decline of Urdu in Uttar Pradesh,** के अंतर्गत औपनिवेशिक भारत मे संयुक्त प्रान्त मे हिन्दी तथा उर्दू भाषा के विकास के चरण और बाद के समय मे उर्दू के हास पर चर्चा किया है। हिन्दु और मुस्लिम की शिक्षा हेतु हिन्दी तथा उर्दू भाषा के प्रयोग को बताया है। संयुक्त प्रान्त में हिन्दी भाषा में प्रकाशित प्रथम अखबार बनारस अखबार था तथा कुछ समय बाद 1855 ई. से सर्वहितकारक का प्रकाशन आरम्भ हुआ जो हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुआ।

- Shreya Tiwari ने अपने लेख **Educational Institutions of Kashi: Ancient to Modern Period** में बनारस का विवरण दिया है। इसमें प्राचीन काल से ही काशी के सांस्कृतिक

व परंपरागत रूप के साथ वैदिक काल से ही काशी का अपनी शिक्षा के लिए पहचान के विषय में बताया है। इसमें लेखिका ने प्राचीन काल से आधुनिक काल तक बदलते दौर में काशी में बदलते शिक्षा के स्वरूप तथा शिक्षण संस्थाओं की चर्चा की है।

- Michael S. Dodson ने अपने लेख **Re-Presented for the Pandits** में बनारस की स्थिति, संस्कृति आदि के विषय में, 18 वीं शताब्दी में बनारस का अंग्रेजों के सहयोग से अवध से अलग होना, मराठों द्वारा बनारस में दिए गए योगदान, जोनाथन डंकन द्वारा स्थापित संस्कृत कालेज की संरचना, उसकी शिक्षा व्यवस्था, 1846 ई० से 1861 ई० के बीच बैलेनटाइन का संस्कृत कालेज के सुपरिटेंडेंट के रूप में कार्यों तथा कालेज की शिक्षा व्यवस्था के विषय में उल्लेख किया है।

- Madhuri Desai ने अपने लेख **Mosques,Temples and Orientalists** में बनारस , प्राचीन काल से एक हिंदु नगर के रूप में बनारस, बनारस में प्राच्य वादी, जेम्स प्रिंसेप द्वारा बनारस में किए गए कार्यों आदि का उल्लेख किया है।

- Nita Kumar ने अपने लेख **Widows Education and Social Change in Twentieth Century Banaras** में मुख्य रूप से बनारस के समाज व शैक्षिक इतिहास, समाज में महिलाओं की स्थिति, बनारस में महिला शिक्षाविदों का शिक्षा में योगदान आदि के विषय में जानकारी दिया है। इसमें महिलाओं द्वारा बनारस में स्थापित शिक्षण संस्थाओं की भी चर्चा की गई है।

- अभय कुमार शर्मा ने अपने शोध कार्य **वाराणसी में शिक्षक- शिक्षा संस्थाओं की वृद्धि एवं विकास (1850 ई० से 2017 ई० तक)** में बनारस में शिक्षा व्यवस्था, अंग्रेजी शासन में शिक्षक-शिक्षा संस्थाओ का विकास, ब्रिटिश काल तथा उसके पश्चात के समय में बनारस में शिक्षक-शिक्षा संस्थाओ के विकास में स्थानीय सरकारो, संगठनों एवं व्यक्तियों आदि के योगदान की व्याख्या की है।

- Kuber Nath Sukul ने अपनी पुस्तक **Varanasi Down The Ages** में प्राचीन काल से बनारस में चले आ रहे शिक्षा के स्वरूप, समय के साथ शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले विभिन्न परिवर्तन, ब्रिटिश काल में वाराणसी में शिक्षा व्यवस्था आदि के विषय में प्रकाश डाला है। इसमें ब्रिटिश काल के दौरान वाराणसी में सरकारी तथा निजी प्रयत्न से स्थापित विभिन्न स्तरीय शिक्षण संस्थानों के विषय में भी जानकारी दी गई है।

- अजय कुमार सिंह (2005) ने अपने शोध प्रबंध **वाराणसी मंडल में शैक्षिक विकास एवं पर्यावरण** में वाराणसी की भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण और वाराणसी में शिक्षा के क्रमिक विकास पर शोध कार्य प्रस्तुत किया है।

समस्या का कथन

ज्ञान और शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के अंदर सोचने की शक्ति तथा तर्क शक्ति का विकास होता है। बुनियादी शिक्षा जीवन की मूलभूत आवश्यकता मे से है। विद्यार्थी

तथा अध्यापक दोनो ही किसी भी शिक्षा व्यवस्था के मूल आधार हैं। प्राचीन काल से औपनिवेशिक काल तक तथा उसके पश्चात भी भारत में समय-समय पर शिक्षा के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। शिक्षा में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षण संस्थानों में भी परिवर्तन हुए। अतः शिक्षा के स्वरूप को समझने हेतु , छात्रों की शिक्षा में रूचि को बढ़ाने हेतु तथा आधुनिक शिक्षण संस्थानों की व्यवस्था को मूलरूप से जानने हेतु यह आवश्यक है कि ब्रिटिश काल में शिक्षण संस्थानों की स्थापना किन परिस्थितियों मे व किस प्रकार हुई। उनके वृद्धि व विकास के क्रम को जानना आवश्यक है। इस प्रकार शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा प्रस्तुत की गई विभिन्न शिक्षा नीतियों ने शिक्षण संस्थाओं के विकास को किस प्रकार प्रभावित किया। राष्ट्रीय आंदोलनों ने शिक्षण संस्थानों के स्थापना व विकास के क्रम में किस प्रकार योगदान दिए।

शोध परिसीमन

- **विषय अनुसार:-** विषय के विस्तार को देखते हुए शोध अध्ययन हेतु ब्रिटिश काल मे शिक्षा व्यवस्था के संपूर्ण स्वरूप मे 'शिक्षण संस्थानों का विकास' चयन किया गया है।
- **क्षेत्र अनुसार:-** अध्ययन हेतु क्षेत्र के रूप में भारत के वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित वाराणसी का चयन किया गया है।
- **काल अनुसार:-** अध्ययन को सूक्ष्म रूप प्रदान करने हेतु संपूर्ण ब्रिटिश काल से अध्ययन हेतु 1900 ई० से 1947 ई० तक का समय चयनित किया गया है।

उद्देश्य

- 1900 ई० से पूर्व ब्रिटिश शासन द्वारा भारत में प्रस्तावित शिक्षा नीतियों का अध्ययन करना।
- 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वाराणसी में शिक्षण संस्थानों के विकास का अध्ययन करना।
- 1900 ई० से 1947 ई० के बीच वाराणसी में शिक्षण संस्थानों के विकास में सहायक तत्वों की खोज करना।
- 20 वीं शताब्दी में होने वाले राष्ट्रीय आंदोलनों का वाराणसी के शिक्षण संस्थानों पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- 1900 ई० से पूर्व भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा कुछ शिक्षा नीतियाँ प्रस्तुत की गई जिससे भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन आया।
- 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वाराणसी में शिक्षण संस्थानों की स्थापना व विकास के क्रम में तीव्रता देखने को मिलती है।
- 1900 ई० से 1947 ई० के बीच वाराणसी में शिक्षण संस्थानों के विकास में सरकारी तथा गैर सरकारी दोनो प्रकार के सहायक तत्व कार्यरत थे।
- 20 वीं शताब्दी हुए भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों ने वाराणसी के शिक्षण संस्थानों पर भी प्रभाव डाला।

शोध प्रविधि

यह शोध अध्ययन मूलतः ऐतिहासिक विश्लेषण तथा व्याख्यात्मक प्रणाली पर आधारित होगा। इसमे विषय से संबंधित तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जायेगा।

- **शोध यंत्र :-** विषय संबंधित पाठ्यपुस्तक, लेख, सरकारी तथा गैर सरकारी दस्तावेज।

- **तथ्य संकलन :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन मे प्राथमिक व द्वितीयक दोनो प्रकार के स्रोतो का संकलन किया जायेगा।

प्राथमिक तथ्य मे मुख्य रूप से सरकारी दस्तावेज व आर्काइव आदि का अध्ययन, संबंधित शिक्षण संस्थाओं का अवलोकन व अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीयक तथ्य मे संबंधित पाठ्यपुस्तक, शोध पत्र, पत्र-पत्रिकाओ आदि का अध्ययन किया जायेगा।

शोध उपादेयता

शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लागू होने वाला एक महत्वपूर्ण विषय है। शिक्षा के किसी भी क्षेत्र मे हुए विकास को समझने हेतु उसको समग्र रूप मे देखना होगा। इसके लिए शिक्षण संस्थाओं कि स्थापना व विकास के क्रम को जानना आवश्यक होगा। भारत में स्थापित आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के प्रभाव का प्रतिफल है। ब्रिटिश शासन द्वारा प्रस्तावित विभिन्न शिक्षा नीतियों के आधार पर ही ब्रिटिश काल में शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई जिनमें अधिकांश वर्तमान समय में भी कार्यरत हैं। अतः उनके वर्तमान शिक्षा प्रारूप को जानने हेतु शिक्षण संस्थानों की स्थापना, पाठ्यक्रम, विकास आदि का ऐतिहासिक अध्ययन आवश्यक है।

अध्यायीकरण

1- प्रस्तावना
2- ब्रिटिश काल में शिक्षा का विकास
3- 20वीं शताब्दी के पूर्व वाराणसी में शिक्षण संस्थाओं का स्वरूप तथा विकास
4- 20वीं शताब्दी में वाराणसी में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना तथा विकास
5- उपसंहार

संदर्भ

प्राथमिक स्रोत

- मुहम्मद इब्न अहमद अलबेरुनी, अलबेरुनी का भारत (संतराम) (नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन,2018)
- H.R. Nevill, District Gazetteers of United Provinces of Agra and Oudh. (Lucknow,1922) Vol.37
- J.A. Richey, Progress Report on Education in India 1917-1922. (Calcutta: Superintendent Government Printing, 1923)
- John Sergent with Government of India, Progress of Education in India 1932-1937. (Simla: Government of India Press,1940)
- M. Kempson, Report on the Progress of Education in the North-Western Provinces for 1873-74. (Allahabad: Printed at the North-Western Provinces Government Press,1874)
- Report on Administration of the United Provinces of Agra and Oudh 1906-1907. (Allahabad: Government Press, United Provinces ,1908)
- Report on Administration of the United Provinces of Agra and Oudh 1933-1934. (Lucknow: Government Branch Press,1935)
- Supdt. F. Luker, Report on the Administration of the United Provinces of Agra and Oudh 1911-1912. (Allahabad: Government Press, United Provinces,1912)
- Superintendent of Government Printing, United Provinces of Agra and Oudh. (Calcutta: Calcutta publication,1908) Vol. 1
- V.A. Sundaram, Benares Hindu University (1905-1935) (Benares: The Tara Printing Works, 1936)

द्वितीयक स्रोत

- अभय कुमार शर्मा, वाराणसी में शिक्षक- शिक्षा संस्थाओं की वृद्धि एवं विकास (1850 ई० से 2017 ई० तक)(वाराणसी: काशी हिंदु विश्वविद्यालय शोध प्रबंध,2022)
- अजय कुमार सिंह, वाराणसी मंडल में शैक्षिक विकास एवं पर्यावरण (जौनपुर: वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय शोध प्रबंध,2005)
- Anu Kumar, "New Lamps for Old: Colonial Experiments with Vernacular Education, PreandPost-1857" Economic and Political Weekly, Vol. 42, No. 19 (May 12-18, 2007): pp.1710-1716: Accessed at 27 September 2023 https://www.jstor.org/stable/4419574
- Aparna Basu, "COLONIAL EDUCATION: A COMPARATIVE APPROACH" Proceedings of the Indian History Congress, Vol. 50, Golden Jubilee Session (1989): pp.707-736: Accessed at 27 September 2023 https://www.jstor.org/stable/44146127
- A.S. Altekar, Education in Ancient India (Delhi: Isha Books,2014)

- Ather Farouqui, "Urdu Education in India: Four Representative States" Economic and Political Weekly, Vol. 29, No. 14 (Apr. 2, 1994): pp. 782-785: Accessed at 27 September 2023 https://www.jstor.org/stable/4401026
- Charles A. Sauer, "The Place of the Vernacular Language in Colonial Education" The Modern Language Journal, Vol. 27, No. 3 (Mar, 1943): pp.180-183: Accessedat 27 September2023 https://www.jstor.org/stable/318025
- Christopher King, "The Hindi-Urdu Controversy of the North-Western Provinces and Oudh and Communal Consciousness" Journal of South Asian Literature, Vol. 13, No. ¼, MISCELLANY (FALL-WINTER-SPRING-SUMMER 1977-1978): pp. 111-120: Accessed at 27 September 2023 https://www.jstor.org/stable/40873494
- David J.Matthews, "Urdu Language and Education in India" Social Scientist , Vol. 31, No. 5/6 (May – Jun., 2003): pp. 57-72: Accessed at 27 September 2023 https://www.jstor.org/stable/3518034
- Dharampal, The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth century. (Goa: Other India Press, 2000 AD)
- Jagdish Chand, Education in Ancient and Medieval India (Delhi: Anshah Publishing House, 2009)
- J.M. Sen, History of Elementary Education in India. (Calcutta: The Book Company Ltd,1941)
- J.P. Naik & Syed Nurullah, History of Education in India During British Period. (Calcutta: Macmillan & CO., LTD, 1943)
- Kamala Prashad Mishra, Banaras in Transition (1738-1795) (New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd.)
- Krishna Kumar, Political Agenda of Education: A Study of Colonialist and Nationalist Ideas. (New Delhi: Sega Publication, 2005)
- Kuber Nath Sukul, Varanasi Down The Ages (Varanasi: Bhargava Bhushan Press)
- Madhuri Desai, "Mosques, Temples, and Orientalists: Hegemonic Imaginations in Banaras" Traditional Dwellings and Settlements Review, FALL 2003, Vol. 15, No. 1 (FALL 2003): pp. 23-37, https://www.jstor.org/stable/41758028
- Major B.D. Basu, History of Education in India Under the Rule of East India company (Calcutta: The Modern Review Office)
- Michael S. Dodson," Re-Presented for the Pandits: James Ballantyne, 'Useful Knowledge,' and Sanskrit Scholarship in Benares College during the Mid Nineteenth Century" Modern Asian Studies, May, 2002, Vol. 36, No. 2 (May, 2002): pp. 257-298 https://www.jstor.org/stable/3876657
- Nita Kumar, "Widows, Education and Social Change in Twentieth Century Banaras" Economic and Political Weekly, Apr. 27, 1991, Vol. 26, No. 17 (Apr. 27, 1991): pp. WS19-WS25, https://www.jstor.org/stable/4397985

109-117: Accessed at 27 September 2023 https://www.arcjournals.org/international-journal-ofhumanities-social-sciences-and-education/volume-4-issue-12/14

- S.N. Mukerji, History of Education in India; Modern Period (Baroda: Acharya Book Depot, 1951)
- S.P. Chaube and A. Chaube, Education in Ancient and Medieval India (Noida: Vikas Publishing House PVT LTD, 2011)
- Suresh Chandra Ghosh, Education Policy in India Since Warren Hastings (Calcutta: Naya Prokash, 1989)
- Sumeet Tanwar, "Vernacular Education in India: British Education Policy in 1840" International Journal of Humanities Social Sciences and Education 4(12) (2017)

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. मनीष कुमार
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा, बिहार

शोधार्थी
प्रिया सिंह